

গুরুবাণী ::: ৭

রহরাসি সাহিব

::::: শিখ ধর্ম বিভংন গুরু :::::
 ----গুরুমুখী লিপি রচিত বাণী----

::: বংগলা লিপ্যাংতরণ :::

এক তুচ্ছ সেবক--- সুরিংদরজীত সিংঘ ভংবরা

ই-মেল:-- sjsingh2000@yahoo.com



রহরাসি

সো দরু

রাগু আসা মহলা ১

৭৮ ১ওংকার সতিগুর প্রসাদি ॥

সো দরু তেরা কেহা সো ঘরু কেহা জিতু বহি সরব সমালে ॥ বাজে তেরে নাদ অনেক অসংখা কেতে তেরে বাবণহারে ॥ কেতে তেরে রাগ পরী সিউ কহীঅছি কেতে তেরে গাবণহারে ॥ গাবনি তুখনো পবণু পাণী বৈসংতরু গাবৈ রাজা ধরমু দুআরে ॥ গাবনি তুখনো চিতু গুপতু লিখি জাণনি লিখি লিখি ধরমু বীচারে ॥ গাবনি তুখনো ঈসরু ব্রহমা দেবী সোহনি তেরে সদা সবারে ॥ গাবনি তুখনো ইংদ্র ইংদ্রাসণি বৈঠে দেবতিআ দরি নালে ॥ গাবনি তুখনো সিধ সমাধী অংদরি গাবনি তুখনো সাধ বীচারে ॥ গাবনি তুখনো জতী সতী সংতোখী গাবনি তুখনো বীর করারে ॥ গাবনি তুখনো পংডিত পড়নি রখীসুর জুগু জুগু বেদা নালে ॥ গাবনি তুখনো মোহণীআ মনু মোহনি সুরগু মছু পইআলে ॥ গাবনি তুখনো রতন উপাএ তেরে অঠসঠি তীরথ নালে ॥ গাবনি তুখনো জোধ মহাবল সুরা গাবনি তুখনো খাণী চারে ॥ গাবনি তুখনো খংড মংডল ব্রহমংডা করি করি রখে তেরে ধারে ॥ সোঈ তুখনো গাবনি জো তুধু ভাবনি রতে তেরে ভগত রসালে ॥ হোরি কেতে তুখনো গাবনি সে মৈ চিতি ন আবনি নানকু কিআ বীচারে ॥ সোঈ সোঈ সদা সচু সাহিবু সাচা সাচী নাঈ ॥ হৈ ভী হোসী জাই ন জাসী রচনা জিনি রচাঈ ॥ রংগী রংগী ভাতী করি করি জিনসী মাইআ জিনি উপাঈ ॥ করি করি দেখে কীতা আপণা জিউ তিসদী বডিআঈ ॥ জো তিসু ভাবৈ সোঈ করসী ফিরি হুকমু ন করণা জাঈ ॥ সো পাতিসাহ সাহা পতি সাহিবু নানক রহণু রজাঈ ॥ ১ ॥

আসা মহলা ১ ॥

সুণি বডা আখে সডু কোই ॥ কেবডু বডা ডীঠা হোই ॥ কীমতি পাই ন কহিআ জাই ॥ কহণৈ বালে তেরে রহে সমাই ॥ ১ ॥ বডে মেরে সাহিবা গহির গংভীরা গুণী গহীরা ॥ কোই ন জাণে তেরা কেতা কেবডু চীরা ॥ ১ ॥ রহাউ ॥ সডি সুরতী মিলি সুরতি কমাই ॥ সড কীমতি মিলি কীমতি পাঈ ॥ গিআনী ধিআনী গুর গুরহাঈ ॥ কহণু ন জাঈ তেরী তিলু বডিআঈ ॥ ২ ॥ সডি সত সডি তপ সডি চংগিআঈআ ॥ সিধা পুরখা কীআ বডিআঈআ ॥ তুধু বিণু সিধী কিনৈ ন পাঈআ ॥ করমি মিলৈ নাই ঠাকি রহাঈআ ॥ ৩ ॥ আখণ বালা কিআ বেচারা ॥ সিফতী ভরে তেরে ভংডারা ॥ জিসু তু দেহি তিসৈ কিআ চারা ॥ নানক সচু সবারণহারা ॥ ৪ ॥ ১ ॥

আসা মহলা ১ ॥

আখা জীবা বিসরৈ মরি জাউ ॥ আখণি অউখা সাচা নাউ ॥ সাচে নাম কী লাগৈ ভুখ ॥ উতু ভুখে খাই চলীঅছি দুখ ॥ ১ ॥ সো কিউ বসরৈ মেরী মাই ॥ সাচা সাহিবু সাচৈ নাই ॥ ১ ॥ রহাউ ॥ সাচে নাম কী তিলু বডিআঈ ॥ আখি থকে কীমতি নহী পাঈ ॥ জে সডি মিলি কৈ আখণ পাই ॥ বডা ন হোবৈ ঘাটি ন জাই ॥ ২ ॥ না ওহ মরৈ ন হোবৈ সোগু ॥ দেদা রহৈ ন চুকে ভোগু ॥ গুণু এহো হোরু নাই কোই ॥ না কো হোআ না কো হোই ॥ ৩ ॥ জেবডু আপি তেবড তেরী দাতি ॥ জিনি দিনু করি কৈ কীতী রাতি ॥ খসমু বিসারহি তে কমজাতি ॥ নানক নাবৈ বাবু সনাতি ॥ ৪ ॥ ৩ ॥

রাগু গুজরী মহলা ৪ ॥

হরি কে জন সতিগুর সত পুরখা বিনউ করউ গুর পাসি ॥ হম কীরে কিরম সতিগুর সরণাঈ করি দইআ নামু পরগাসি ॥ ১ ॥ মেরে মীত গুরদেব মো কউ রাম নামু পরগাসি ॥ গুরমতি নামু মেরা প্রান সখাঈ হরি কীরতি হমরী রহরাসি ॥ ১ ॥ রহাউ ॥ হরি জন কে বড ভাগ বডেরে জিন হরি হরি সরধা হরি পিআস ॥ হরি

হরি নামু মিলৈ ত্রিপতাসহি মিলি সংগতি গুণ পরগাসি ॥২॥ জিন হরি হরি হরিরসু নামু ন পাইআ তে ভাগহীণ জম পাসি ॥ জো সতিগুর সরণি সংগতি নহী আএ ধ্বিগু জীবে ধ্বিগু জীবাসি ॥৩॥ জিন হরিজন সতিগুর সংগতি পাঈ তিন ধুরি মসতকি লিখিআ লিখাসি ॥ ধনু ধনু সতসংগতি জিতু হরিরসু পাইআ মিলি জন নানক নামু পরগাসি ॥৪॥৪॥

রাগ গুজরী মহলা ৫ ॥

কাহে রে মন চিতবহি উদমু জা আহরি হরি জীউ পরিআ ॥ সৈল পথর মহি জংত উপাএ তাকা রিজকু আঁগৈ করি ধরিআ ॥১॥ মেরে মাধউ জী সতসংগতি মিলে সু তরিআ ॥ গুরপরসাদি পরমপদু পাইআ সূকে কাসট হরিআ ॥১॥ রহাউ ॥ জননি পিতা লোক সুত বনিতা কোই ন কিস কী ধরিআ ॥ সিরি সিরি রিজকু সংবাহে ঠাকুরু কাহে মন ভউ করিআ ॥২॥ উডে উডি আবে সৈ কোসা তিসু পাছে বচরে ছরিআ ॥ তিন কবণু খলাবে কবণু চুগাবে মন মহি সিমরনু করিআ ॥৩॥ সতি নিধান দস অসট সিধান ঠাকুর কর তল ধরিআ ॥ জন নানক বলি বলি সদ বলি জাঈ তেরা অংতু ন পারাবরিআ ॥৪॥৫॥

রাগ আসা মহলা ৪

সো পুরখু

৭৮ ১৩ংকার সতিগুর প্রসাদি ॥

সো পুরখু নিরংজনু হরি পুরখু নিরংজনু হরি অগমা অগম অপারা ॥ সতি ধিআবহি সতি ধিআবহি তুধু জী হরি সচে সিরজণহারা ॥ সতি জীঅ তুমারে জী তুং জীআ কা দাতারা ॥ হরি ধিআবহু সংতহু জী সতি দূখ বিসারণহারা ॥ হরি আপে ঠাকুরু হরি আপে সেবকু জী কিআ নানক জংত বিচারা ॥১॥ তুং ঘট ঘট অংতরি সরব নিরংতরি জী হরি একো পুরখু সমাণা ॥ ইকি দাতে ইকি ভেখারী জী সতি তেরে চোজ বিডাণা ॥ তুং আপে দাতা আপে ভুগতা জী হউ তুধু বিনু অবরু ন জাণা ॥ তুং পাররহমু বেঅংতু বেঅংতু জী তেরে কিআ গুণ আখি বখাণা ॥ জো সেবহি জো সেবহি তুধু জী জনু নানকু তিন কুরবাণা ॥২॥ হরি ধিআবহি হরি ধিআবহি তুধু জী সে জন জুগ মহি সুখবাসী ॥ সে মুকতু সে মুকতু ভএ জিন হরি ধিআইআ জী তিন তুটী জম কী ফাসী ॥ জিন নিরভউ জিন হরি নিরভউ ধিআইআ জী তিন কা ভউ সডু গবাসী ॥ জিন সেবিআ জিন সেবিআ মেরা হরি জী তে হরি হরি রূপি সমাসী ॥ সে ধনু সে ধনু জিন হরি ধিআইআ জী জনু নানকু তিন বলি জাসী ॥৩॥ তেরী ভগতি তেরী ভগতি ভংডার জী ভরে বিঅংত বেঅংতা ॥ তেরে ভগত তেরে ভগত সলাহনি তুধু জী হরি অনিক অনেক অনংতা ॥ তেরী অনিক তেরী অনিক করহি হরি পূজা জী তপু তাপহি জপহি বেঅংতা ॥ তেরে অনেক তেরে অনেক পড়হি বহু সিম্ভিতি সাসত জী করি কিরিআ খটু করম করংতা ॥ সে ভগত সে ভগত ভলে জন নানক জী জো ভাবহি মেরে হরি ভগবংতা ॥৪॥ তুং আদি পুরখু অপরংপরু করতা জী তুধু জেবডু অবরু ন কোঈ ॥ তুং জুগু জুগু একো সদা সদা তুং একো জী তুং নিহচলু করতা সোঈ ॥ তুধু আপে ভাবে সোঈ বরতৈ জী তুং আপে করহি সু হোঈ ॥ তুধু আপে সিসটি সভ উপাঈ জী তুধু আপে সিরজি সভ গোঈ ॥ জন নানকু গুণ গাবে করতে কে জী জো সভসৈ কা জাণোঈ ॥৫॥১১॥

আসা মহলা ৪ ॥

তুং করতা সচিআর মৈডা সাংঈ ॥ জো তউ ভাবে সোঈ থীসী জো তুং দেহি সোঈ হউ পাঈ ॥১॥ রহাউ ॥ সভ তেরী তুং সভনী ধিআইআ ॥ জিস নো ক্রিপা করহি তিনি নাম রতনু পাইআ ॥ গুরমুখি লাধা মনমুখি গবাইআ ॥ তুধু আপি বিছোড়িআ আপি মিলাইআ ॥১॥ তুং দরীআউ সভ তুঝহী মাহি ॥ তুঝ বিনু দুজা কোঈ

नाहि ॥ जीअ जंगत सडि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुडिआ संजोगी मेलु ॥२॥ जिस नो तू जाणहिहि
सोसि जनु जाणै ॥ हरगुणि सद ही आधि बथाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाईआ ॥ सहजे ही हरिनामि
समाईआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सडु होई ॥ तूधु विनु दूजा अवरु न कोई ॥ तू करि करि बेखहि
जाणहि सोई ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होई ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरडै भसले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पशु नही चालै हम देखा
तह डूवीअले ॥१॥ मन एकु न चेतसि मूड मना ॥ हरि विसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ
जती सती नही पडिआ मूरख मुगधा जनमु भईआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही विसरिआ
॥२॥३॥

आसा महला ५ ॥

भस परापति मानुख देहरीआ ॥ गोविंद मिलण की इह तेरी वरीआ ॥ अवरि काज तेरे किंते न
काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु रिखा जात रंगि
माईआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ जपु तपु संजमु धरमु न कमाईआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राईआ ॥ कह नानक
हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखउ सरमा ॥२॥४॥

पा: १० कवियोवाच बेनती ॥ चोपड ॥

हमरी करो हाथ दै रछ्छा ॥ पूरन होई चित की इछ्छा ॥ तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान
करो प्रतिपारा ॥१॥ हमरे दुसट सडे तुम घाबह ॥ आपु हाथ दै मोहि बचाबह ॥ सुखी बैसे मोरो परिवारा ॥
सेवक सिख्ख सडे करतारा ॥२॥ मो रछ्छा निज कर दै करिये ॥ सब बैरन को आज संघरिये ॥ पूरन
होई हमारी आसा ॥ तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥ तुमहि छाडि कोसि अवर न धियाउं ॥ जो वर चहों
सु तुम ते पाउं ॥ सेवक सिख्ख हमारे तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥४॥ आप हाथ दै मुँवे
उवरिये ॥ मरन काल का त्रास निवरिये ॥ हूजो सदा हमारे पछ्छा ॥ श्री असिधुज जू करियह रछ्छा
॥५॥ राखि लेह मुहि राखनहारे ॥ साहिव संत सहई पियारे ॥ दीन बंधु दुसटन के हंता ॥ तुमहो पुरी
चतुर दस कंता ॥६॥ काल पाई ब्रहमा वपु धरा ॥ काल पाई सिवजू अवतरा ॥ काल पाई कर विसनु प्रकासा
॥ सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥ जवन काल जोगी सिव कीओ ॥ वेदराज ब्रहमा जू थीओ ॥ जवन काल
सब लोक सवारा ॥ नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥ जवन काल सब जगत बनायो ॥ देव दैत जछ्छन
उपजायो ॥ आदि अंति एकै अवतरा ॥ सोसि गुरु समरियह हमारा ॥९॥ नमसकार तिस ही को हमारी
॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥ सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ॥ सन्न को पल मो बध कीओ ॥१०॥
घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥ चीटी ते कुंकर असथूला ॥ सब पर क्रिपा
दिसटि कर फूला ॥११॥ संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक की पीर पछाने ॥
घट घट के पट पट की जाने ॥१२॥ जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तव देह अपारा ॥ जब
आकरख करत हो कबहू ॥ तूम मै मिलत देह धर सभहू ॥१३॥ जेते बदन सिसटि सब धारे ॥ आपु
आपनी बुरा उचारे ॥ तूम सभही ते रहत निरालम ॥ जानत वेद वेद अर आलम ॥१४॥ निरंकार
बिबिकार निरलंग ॥ आदि अनील अनादि असंग ॥ ताका मूडह उचारत वेदा ॥ जाको भेव न पावत वेदा
॥१५॥ ताको करि पाहन अनुमानत ॥ महा मूडह कछु वेद न जानत ॥ महादेव को कहत सदा सिव ॥
निरंकार का चीनत नहि भिव ॥१६॥ आपु आपनी बुधि है जेती ॥ वरनत भिंन भिंन तूहि तेती ॥ तूमरा

